3

# संधि
(Joining)

संधि का शाब्दिक अर्थ है—मेल। लेकिन व्याकरण में संधि का अर्थ दो या दो से अधिक ध्वनियों या वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) से होता है; जैसे—

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी ➤ (आ + अ = आ)  धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य ➤ (अ + ऐ = ऐ)
नदी + ईश = नदीश ➤ (ई + ई = ई)  भानु + उदय = भानूदय ➤ (उ + उ = ऊ)

उपर्युक्त उदाहरणों में पहले शब्द की अंतिम ध्वनि तथा दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि के परस्पर मेल से परिवर्तन आ गया है। यही परिवर्तन संधि है। अतएव,

दो ध्वनियों अथवा वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार अथवा परिवर्तन को **संधि** कहते हैं।

**विशेष :** संधि करते समय इस बात का ध्यान रखें कि दो शब्दों या पदों के मेल से एक सार्थक शब्द की रचना हो।

**संधि-विच्छेद (Disjoining) :** संधि का अर्थ है—मिलना और विच्छेद का अर्थ है—अलग होना। अतः दो वर्णों के मेल से बने नए शब्द को वापस पहले वाली स्थिति में लाना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे—

देवेंद्र = देव + इंद्र  वसंतोत्सव = वसंत + उत्सव  नमस्ते = नमः + ते

## संधि के भेद (Kinds of Joining)

संधि के निम्नांकित तीन भेद हैं :

1. स्वर संधि  2. व्यंजन संधि  3. विसर्ग संधि

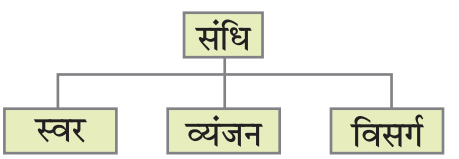


### 1. स्वर संधि (Joining of Vowels)

दो स्वरों के परस्पर मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे—

परम + आत्मा = परमात्मा  गण + ईश = गणेश  सु + आगत = स्वागत

**स्वर संधि के भेद (Kinds of Joining of Vowels) :** स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं :

क. दीर्घ संधि  ख. गुण संधि  ग. वृद्धि संधि  घ. यण संधि  ङ. अयादि संधि

**क. दीर्घ संधि :** यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर ('अ', 'इ', 'उ') के बाद अन्य ह्रस्व या दीर्घ स्वर ('अ', 'इ', 'उ') आ जाए, तो दोनों के मेल से दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ) बन जाते हैं; जैसे—

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | + | अ | = आ | रस | + | अयन | = रसायन | योग | + | अभ्यास | = योगाभ्यास |
| अ | + | आ | = आ | परम | + | आनंद | = परमानंद | छात्र | + | आवास | = छात्रावास |
| आ | + | अ | = आ | सेवा | + | अर्थ | = सेवार्थ | सीमा | + | अंकन | = सीमांकन |
| आ | + | आ | = आ | वार्ता | + | आलाप | = वार्तालाप | महा | + | आशय | = महाशय |
| इ | + | इ | = ई | अति | + | इव | = अतीव | मुनि | + | इंद्र | = मुनींद्र |
| इ | + | ई | = ई | कपि | + | ईश्वर | = कपीश्वर | गिरि | + | ईश | = गिरीश |
| ई | + | इ | = ई | नारी | + | इष्ट | = नारीष्ट | लक्ष्मी | + | इच्छा | = लक्ष्मीच्छा |
| ई | + | ई | = ई | मही | + | ईश्वर | = महीश्वर | रजनी | + | ईश | = रजनीश |
| उ | + | उ | = ऊ | भानु | + | उदय | = भानूदय | साधु | + | उपदेश | = साधूपदेश |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ | + ऊ | = ऊ | सिंधु | + ऊर्मि | = सिंधूर्मि | भानु | + ऊर्जा | = भानूर्जा |
| ऊ | + उ | = ऊ | भू | + उत्सर्ग | = भूत्सर्ग | वधू | + उत्सव | = वधूत्सव |
| ऊ | + ऊ | = ऊ | भू | + ऊर्ध्व | = भूर्ध्व | वधू | + ऊर्मि | = वधूर्मि |

**ख. गुण संधि :** यदि 'अ'/'आ' के बाद 'इ'/'ई', 'उ'/'ऊ', 'ऋ' आ जाए, तो दोनों के मिलने पर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है; जैसे—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | + इ | = ए | ज्ञान | + इंद्र | = ज्ञानेंद्र | शुभ | + इच्छा | = शुभेच्छा |
| अ | + ई | = ए | गण | + ईश | = गणेश | परम | + ईश्वर | = परमेश्वर |
| आ | + इ | = ए | महा | + इंद्र | = महेंद्र | यथा | + इष्ट | = यथेष्ट |
| आ | + ई | = ए | लंका | + ईश | = लंकेश | महा | + ईश्वर | = महेश्वर |
| अ | + उ | = ओ | चंद्र | + उदय | = चंद्रोदय | हित | + उपदेश | = हितोपदेश |
| आ | + उ | = ओ | गंगा | + उदक | = गंगोदक | महा | + उत्सव | = महोत्सव |
| अ | + ऊ | = ओ | सूर्य | + ऊष्मा | = सूर्योष्मा | समुद्र | + ऊर्मि | = समुद्रोर्मि |
| आ | + ऊ | = ओ | दया | + ऊर्मि | = दयोर्मि | गंगा | + ऊर्मि | = गंगोर्मि |
| अ | + ऋ | = अर् | देव | + ऋषि | = देवर्षि | सप्त | + ऋषि | = सप्तर्षि |
| आ | + ऋ | = अर् | राजा | + ऋषि | = राजर्षि | महा | + ऋषि | = महर्षि |

**ग. वृद्धि संधि :** यदि 'अ'/'आ' के बाद 'ए'/'ऐ' हो, तो दोनों के स्थान पर ऐ ; 'ओ'/'औ' हो, तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है; जैसे—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | + ए | = ऐ | धन | + एषणा | = धनैषणा | जीव | + एषणा | = जीवैषणा |
| आ | + ए | = ऐ | सदा | + एव | = सदैव | यथा | + एव | = यथैव |
| अ | + ऐ | = ऐ | परम | + ऐश्वर्य | = परमैश्वर्य | मत | + ऐक्य | = मतैक्य |
| आ | + ऐ | = ऐ | महा | + ऐश्वर्य | = महैश्वर्य | शिक्षा | + ऐश्वर्य | = शिक्षैश्वर्य |
| अ | + ओ | = औ | परम | + ओज | = परमौज | मधुर | + ओदन | = मधुरौदन |
| आ | + ओ | = औ | महा | + ओजस्वी | = महौजस्वी | परम | + औषध | = परमौषध |
| अ | + औ | = औ | वन | + औषध | = वनौषध | परम | + औदार्य | = परमौदार्य |
| आ | + औ | = औ | राजा | + औदार्य | = राजौदार्य | महा | + औषध | = महौषध |

**घ. यण संधि :** यदि 'इ'/'ई', 'उ'/'ऊ', 'ऋ' के बाद कोई अन्य स्वर आ जाए, तो 'इ'/'ई' 'के स्थान पर य; 'उ'/'ऊ' के स्थान पर व तथा 'ऋ' के स्थान पर र हो जाता है; जैसे—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ | + अ | = य | यदि | + अपि | = यद्यपि | आदि | + अंत | = आद्यंत |
| इ | + आ | = या | अति | + आचार | = अत्याचार | परि | + आवरण | = पर्यावरण |
| ई | + अ | = य | देवी | + अर्पण | = देव्यर्पण | दासी | + अपराध | = दास्यपराध |
| ई | + आ | = या | नदी | + आगम | = नद्यागम | देवी | + आगमन | = देव्यागमन |
| उ | + अ | = व | मनु | + अंतर | = मन्वंतर | सु | + अल्प | = स्वल्प |
| उ | + आ | = वा | सु | + आगत | = स्वागत | गुरु | + आदेश | = गुर्वादेश |
| उ | + इ | = वि | अनु | + इच्छा | = अन्विच्छा | अनु | + इति | = अन्विति |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ | + | ए | = | वे | अनु | + | एषक | = | अन्वेषक | अनु | + | एषण | = | अन्वेषण |
| ऋ | + | अ | = | र | पितृ | + | अनुमति | = | पित्रनुमति | मातृ | + | अर्पण | = | मात्रर्पण |
| ऋ | + | आ | = | रा | पितृ | + | आज्ञा | = | पित्राज्ञा | मातृ | + | आज्ञा | = | मात्राज्ञा |

**ङ. अयादि संधि :** यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के बाद कोई अन्य स्वर आ जाए, तो 'ए' के स्थान पर अय्; 'ऐ' के स्थान पर आय्; 'ओ' के स्थान पर अव् तथा 'औ' के स्थान पर आव् हो जाता है; जैसे—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ए | + | अ | = | अय् | शे | + | अन | = | शयन | चे | + | अन | = | चयन |
| ऐ | + | अ | = | आय् | विनै | + | अक | = | विनायक | नै | + | अक | = | नायक |
| ओ | + | अ | = | अव् | पो | + | अन | = | पवन | भो | + | अन | = | भवन |
| औ | + | अ | = | आव् | पौ | + | अक | = | पावक | पौ | + | अन | = | पावन |

## 2. व्यंजन संधि (Joining of Consonants)

किसी व्यंजन का व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे—

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जगत् | + | ईश | = | जगदीश | (त् | + | ई | = | दी | ➤ | व्यंजन | + स्वर) |
| सम् | + | योग | = | संयोग | (म् | + | य | = | ञ | ➤ | व्यंजन | + व्यंजन) |
| ऋ | + | न | = | ऋण | (ऋ | + | न् | = | ण | ➤ | स्वर | + व्यंजन) |

**व्यंजन संधि के नियम (Rules of Joining of Consonant) :**

**क. वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन :** यदि वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण (ग्, घ्, ज्, ड्, ढ, द्, ध्, ब्, भ्) अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् या कोई स्वर आ जाए, तो पहला वर्ण अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है; जैसे—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क् | का | ग | ➤ | दिक् | + | दर्शन | = | दिग्दर्शन | दिक् | + | गज | = | दिग्गज |
| च् | का | ज | ➤ | अच् | + | अंत | = | अजंत | | — | | — | |
| ट् | का | ड | ➤ | षट् | + | आनन | = | षडानन | षट् | + | दर्शन | = | षड्दर्शन |
| त् | का | द | ➤ | तत् | + | भव | = | तद्भव | उत् | + | योग | = | उद्योग |
| प् | का | ब | ➤ | कप् | + | अंध | = | कबंध | अप् | + | ज | = | अब्ज |

**ख. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन :** यदि व्यंजन क्, च्, ट्, त्, प् के बाद म या न हो, तो क् = ङ्, च् = ञ्, ट् = ण्, त् = न् और प् = म् हो जाता है; जैसे—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क् | का | ङ | ➤ | वाक् | + | मय | = | वाङ्मय | दिक् | + | नाग | = | दिङ्नाग |
| ट् | का | ण् | ➤ | षट् | + | मास | = | षण्मास | षट् | + | मुख | = | षण्मुख |
| त् | का | न् | ➤ | जगत् | + | नाथ | = | जगन्नाथ | उत् | + | नति | = | उन्नति |
| प् | का | म् | ➤ | अप् | + | मय | = | अम्मय | अप् | + | मल | = | अम्मल |

**ग. 'त' संबंधी नियम :** 'त्' संबंधी कुछ नियम इस प्रकार हैं :

- यदि 'त्' के बाद च या छ आए, तो त् का च् हो जाता है; जैसे—

  उत् + चारण = उच्चारण  उत् + छिन्न = उच्छिन्न

- यदि त् के बाद ज या झ आए, तो त् का ज् हो जाता है; जैसे—

  सत् + जन = सज्जन  उत् + ज्वल = उज्ज्वल

- यदि त् के बाद ट या ठ आए, तो त् का ट् हो जाता है; जैसे—

  तत् + टीका = तट्टीका  – –

❖ यदि त् के बाद ड आए, तो त् का ड् हो जाता है; जैसे—

उत् + डयन = उड्डयन

❖ यदि त् के बाद ल आए, तो त् का ल् हो जाता है; जैसे—

उत् + लेख = उल्लेख  उत् + लास = उल्लास

❖ यदि त् के बाद ह आए , तो त् का द् और ह का ध हो जाता है; जैसे—

उत् + हार = उद्धार  उत् + हरण = उद्धरण

❖ यदि त् के बाद श आए, तो त् का च् और श का छ हो जाता है; जैसे—

उत् + श्वास = उच्छ्वास  तत् + शिव = तच्छिव

**घ. 'म' संबंधी नियम :** 'म्' संबंधी कुछ नियम इस प्रकार हैं :

❖ यदि 'म्' के बाद 'क्' से 'म्' तक कोई व्यंजन आए, तो 'म्' उस व्यंजन के पंचम वर्ण [अनुस्वार ं] में बदल जाता है; जैसे—

म् का ङ ➤ सम् + कल्प = संकल्प  सम् + गम = संगम

म् का ञ ➤ सम् + चय = संचय  सम् + जीवन = संजीवन

म् का न् ➤ सम् + देह = संदेह  सम् + तोष = संतोष

म् का म् ➤ सम् + पूर्ण = संपूर्ण  सम् + बोधन = संबोधन

❖ यदि म् के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह आए, तो 'म्' का सदैव अनुस्वार (ं) हो जाता है; जैसे—

सम् + योग = संयोग  सम् + रक्षण = संरक्षण  सम् + लग्न = संलग्न

सम् + वाद = संवाद  सम् + शय = संशय  सम् + सार = संसार

❖ यदि म् के बाद 'म्' आ जाए, तो 'म्म' हो जाता है; जैसे—

सम् + मुख = सम्मुख  सम् + मान = सम्मान  सम् + मति = सम्मति

**ङ. 'छ' संबंधी नियम :** यदि किसी स्वर के बाद छ आए, तो 'छ' से पहले च् वर्ण जुड़ जाता है; जैसे—

स्व + छंद = स्वच्छंद  अनु + छेद = अनुच्छेद  आ + छादन = आच्छादन

**च. 'न' संबंधी नियम :** यदि ऋ, र या ष के बाद 'न्' हो, तो ण हो जाता है; जैसे—

परि + नाम = परिणाम  राम + अयन = रामायण

**याद रखिए**

- 'चवर्ग', 'टवर्ग', 'तवर्ग', 'श' और 'स' आने पर 'न्' का 'ण' नहीं होता; जैसे–दुर्जन, पर्यटन, दर्शन, रसना, रतन, अर्जुन आदि।

## 3. विसर्ग संधि (Joining of Visarga)

विसर्ग (:) के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे—

दुः + साहस = दुस्साहस  दुः + चरित्र = दुश्चरित्र  नमः + ते = नमस्ते

(: + स = स्)  (: + च = श्)  (: + त = स्)

**विसर्ग संधि के नियम (Rules of Joining of Visarga) :** विसर्ग संधि बनाने के कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं :

**क. विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन :**

यशः + गान = यशोगान  मनः + रथ = मनोरथ  तपः + बल = तपोबल

मनः + रंजन = मनोरंजन  मनः + विनोद = मनोविनोद  मनः + हर = मनोहर

**ख. विसर्ग का 'र्' में परिवर्तन :**

निः + धन = निर्धन  दुः + बुद्धि = दुर्बुद्धि  पुनः + जन्म = पुर्नजन्म

निः + भय = निर्भय  आशीः + वाद = आशीर्वाद  दुः + गुण = दुर्गुण

**ग. विसर्ग का 'श्' में परिवर्तन :**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निः | + चय = निश्चय | दुः | + चरित्र | = दुश्चरित्र | निः | + छल | = | निश्छल |
| निः | + चल = निश्चल | दुः | + शासन | = दुश्शासन | हरिः | + चंद्र | = | हरिश्चंद्र |

**घ. विसर्ग का 'स्' में परिवर्तनः**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निः | + संतान = निस्संतान | निः | + तेज | = निस्तेज | निः | + संकोच | = | निस्संकोच |

**ङ. विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन :**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धनुः | + टंकार = धनुष्टंकार | दुः | + कर्म | = दुष्कर्म | निः | + काम | = | निष्काम |

**च. विसर्ग का लोप होना :**

विसर्ग का 'र' से मेल होने पर विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे—

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निः | + रोग = नीरोग | निः | + रस | = नीरस | निः | + रज | = | नीरज |

**छ. विसर्ग में परिवर्तन न होना :**

यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग का मेल 'क' तथा 'प' से हो, तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे—

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंतः | + करण = अंतःकरण | प्रातः | + काल | = प्रातःकाल | पयः | + पान | = | पयःपान |

## आओ दोहराएँ

- दो वर्णों के परस्पर मेल से उनके मूल रूप में होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।
- दो वर्णों के मेल से बने नए शब्द को पहली स्थिति में वापस लाना संधि-विच्छेद कहलाता है।
- संधि के तीन भेद होते हैं: स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि।
- स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं : दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि।
- व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। विसर्ग के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

## अब बताइए

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)**

1. **दिए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ( ✓ ) चिह्न लगाइए :**

क. संधि कहते हैं:

(a) शब्दांशों के मेल को ☐ (b) शब्दों के मेल को ☐

(c) वर्णों (ध्वनियों) के मेल को ☐ (d) स्वरों के मेल को ☐

ख. संधि के भेद होते हैं:

(a) तीन ☐ (b) चार ☐ (c) पाँच ☐ (d) दो ☐

ग. दो स्वरों के परस्पर मेल से होने वाले परिवर्तन को कहते हैं:

(a) विसर्ग संधि ☐ (b) स्वर संधि ☐ (c) गुण संधि ☐ (d) व्यंजन संधि ☐

घ. यथा + इष्ट की संधि है:

(a) यथीष्ट ☐ (b) यथिष्ट ☐ (c) यथेष्ट ☐ (d) यथेष्ठ ☐

ङ. सूर्य + ऊष्मा की संधि है:

(a) सूर्याष्मा ☐ (b) सूर्योष्मा ☐ (c) सूर्यार्ष्मा ☐ (d) सूर्यौष्मा ☐

च. धन + ऐश्वर्य की संधि है:

(a) धनैश्वर्य ☐ (b) धनेश्वर्य ☐ (c) धन्यैश्वर्य ☐ (d) धन्नैश्वर्य ☐

छ. 'मन्वंतर' का संधि-विच्छेद है:

(a) मन + अंतर ☐ (b) मनु + अंतर ☐ (c) मन्व + अंतर ☐ (d) मनू + अंतर ☐

ज. 'उद्योग' का संधि-विच्छेद है:

(a) उद् + योग ☐ (b) उध् + योग ☐ (c) उद् + युग ☐ (d) उत् + योग ☐

झ. 'तपोबल' का संधि-विच्छेद है:

(a) तप + बल ☐ (b) तपो + बल ☐ (c) तपः + बल ☐ (d) तप् + बल ☐

**2. उचित संधि के सामने ( ✓ ) चिह्न लगाइए:**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क. | तत् + छाया = | तच्छाया | ☐ | तक्षाया | ☐ | तत्क्षाया | ☐ |
| ख. | निः + रोग = | निरोग | ☐ | नीरोग | ☐ | निंरोग | ☐ |
| ग. | षट् + दर्शन = | षडदर्शन | ☐ | षट्दर्शन | ☐ | षड्दर्शन | ☐ |
| घ. | निः + छल = | निस्छल | ☐ | निष्छल | ☐ | निश्छल | ☐ |
| ङ. | वाक् + मय = | वाङ्मय | ☐ | वाङ्मय | ☐ | वाङ्म्य | ☐ |

**3. उदाहरण अनुसार संधि कीजिए:**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नारी + इंदु = | नारींदु | ई + इ = ई | वधू + ऊर्मि = | | |
| षट् + आनन = | षडानन | ट् का ड् | यदि + अपि = | | |
| षट् + मास = | | | तत् + अनुसार = | | |
| सम् + जीवन = | | | सम् + तोष = | | |
| दुः + कर्म = | | | निः + चल = | | |

**4. इन शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए:**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गायिका = | + | | पावक = | + | |
| सच्चरित्र = | + | | संवाद = | + | |
| स्वेच्छा = | + | | निश्चय = | + | |
| परिच्छेद = | + | | दुर्दशा = | + | |
| प्रत्येक = | + | | संकल्प = | + | |

**5. दिए शब्दों को उचित संधि के सामने लिखिए:**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कारावास | वनौषध | अन्वेषक | सूर्योष्मा | नायक | भूत्सर्ग | पत्नीच्छा |
| हितोपदेश | महैश्वर्य | विनायक | चयन | गंगौध | पित्राज्ञा | पर्यावरण |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दीर्घ संधि | — | | | | |
| गुण संधि | — | | | | |
| वृद्धि संधि | — | | | | |
| यण संधि | — | | | | |
| अयादि संधि | — | | | | |

**6. सोचकर उत्तर लिखिए:**

क. संधि-विच्छेद से क्या आशय है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

ख. स्वर संधि के कौन-कौन से भेद हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

ग. व्यंजन संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

## रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment)

1. समाचार-पत्र अथवा पत्रिका को पढ़िए। उसके जिन शब्दों में संधि-विच्छेद संभव हो, उन्हें रेखांकित कर लीजिए। फिर उनका संधि-विच्छेद कीजिए।
2. अपनी पाठ्य-पुस्तक के किसी अनुच्छेद से स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि के उदाहरण छाँटकर लिखिए।